IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, January 2023
Impact Factor: 6.252

मीमांसा–दर्शन में कैवल्य या मोक्ष

डॉ. संजय कुमार
(सहायक शिक्षक)
शास. वेंकट संस्कृत महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध–सारांशः

लोक तथा परलोक में कल्याण की प्राप्ति हो उसे 'धर्म' कहते हैं। इस धर्म या वेद के अर्थ का विचार करने वाला शास्त्र मीमांसा कहलाता है। इस धर्म में दर्शन का भी समावेश हो जाता है। अतः मीमांसा दर्शन छः दर्शनों में सम्मिलित है। इसे पूर्व मीमांसा या कर्ममीमांसा भी कहा जाता है। क्योंकि इस दर्शन में कर्मकाण्ड का ही विशेष रूप से प्रतिपादन किया गया है। कर्मकाण्ड ज्ञान काण्ड से पहले है। इसलिए इस भाग को पूर्व मीमांसा कहा जाता है। वेदान्त में ज्ञान काण्ड पर विशेष रूप से बल दिये जाने का कारण ही उसे उत्तर मीमांसा आदि बिन्दुओं का इस शोध पत्र में उल्लेख करने का एक प्रयास है।

मुख्य शब्दः मीमांसा, दर्शन, कैवल्य, मोक्ष, कर्मकाण्ड, पुनर्जन्म आदि

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

[1]. डॉ. गजानन्द शास्त्री मुसलगांवकर (2003) मीमांसा दर्शन का विवेचनात्मक इतिहास, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान वाराणसी।

[2]. उमाशंकर शर्मा ऋषि (2003) भारतीय दर्शन, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान वाराणसी।

[3]. डॉ. श्रीष्ण सक्सेना (2004) भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान वाराणसी।

[4]. सोमनाथ नेने (2008) मीमांसा दर्शन विमर्श, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली।

[5]. ठाकुर शिवलोचन शाण्डिल्य (2014) मीमांसा दर्शन की ज्ञान–प्रक्रिया, विद्या निधि प्रकाशन, दिल्ली